The Virgin Birth of Jesus Christ

Who doesn't like magic! We all marvel when we see a mere man like us being able to swallow a sword, bring out a pigeon from his coat, or amuse us with some card tricks. But as mature people, we know that magic is basically a combination of great skill, deception of the eye and a lot of Science! We understand that we cannot defy the laws of nature that God has determined. This applies to our human bodies as well – we are limited by what we can achieve as finite beings. Think about childbirth – it is obvious that a man and a woman have to come together for procreation. No person can individually produce a child. It is a biological impossibility! … Unless Someone outside of the natural world intervenes.

Here's how the Bible explains the birth of Jesus Christ in **Luke 1:26-37** (the author himself being a doctor):

> *Now in the sixth month the angel Gabriel was sent from God to a city in Galilee called Nazareth, to a virgin engaged to a man whose name was Joseph, of the descendants of David; and the virgin's name was Mary. And coming in, he said to her, "Greetings, favored one! The Lord is with you." But she was very perplexed at this statement, and kept pondering what kind of salutation this was. The angel said to her, "Do not be afraid, Mary; for you have found favor with God. And behold, you will conceive in your womb and bear a son, and you shall name Him Jesus. He will be great and will be called the Son of the Most High; and the Lord God will give Him the throne of His father David; and He will reign over the house of Jacob forever, and His kingdom will have no end." Mary said to the angel, "How can this be, since I am a virgin?" The angel answered and said to her, "The Holy Spirit will come upon you, and the power of the Most High will overshadow you; and for that reason the holy Child shall be called the Son of God. And behold, even your relative Elizabeth has also conceived a son in her old age; and she who was called barren is now in her sixth month.*
> *For nothing will be impossible with God."*

Mary, as a rational woman, understood the impossibility of her conceiving a child before marriage. But the angel explained it to her that God was going to overshadow her biological limitations. Her conception would be unique across all generations on Earth. Of the billions of human beings who have lived throughout history, only one Person would enter the world in this way. And this baby wouldn't be just a Man. He would be called the Son of God!

Merry Christmas!

In a parallel account in **Matthew 1:18-23**, the Bible explains how Mary's husband received the news of the virgin birth:

> *Now the birth of Jesus Christ was as follows: when His mother Mary had been betrothed to Joseph, before they came together she was found to be with child by the Holy Spirit. And Joseph her husband, being a righteous man and not wanting to disgrace her, planned to send her away secretly. But when he had considered this, behold, an angel of the Lord appeared to him in a dream, saying, "Joseph, son of David, do not be afraid to take Mary as your wife; for the Child who has been conceived in her is of the Holy Spirit. She will bear a Son; and you shall call His name Jesus, for He will save His people from their sins." Now all this took place to fulfill what was spoken by the Lord through the prophet: "BEHOLD, THE VIRGIN SHALL BE WITH CHILD AND SHALL BEAR A SON, AND THEY SHALL CALL HIS NAME IMMANUEL," which translated means, "GOD WITH US."*

Joseph was well aware that this Child wasn't his. And the angel confirmed it, telling him that the origin of the Child was from heaven. Not just the mode of conception was supernatural, but the baby's name had divine consequences. The name "Jesus" means "God saves". If the Baby with the name "God saves" was going to save mankind from their sins, then what does that qualify the baby to be? He is God! God coming down from heaven to earth in human form!

Folks, that is the message of Christmas! It is the infinite, invisible, almighty and holy God taking the form of man for a specific purpose – the salvation of your soul! Just as the virgin birth cannot be explained without divine intervention, the salvation of your soul cannot be achieved without God doing it for you. Your entering heaven based on your own merit or your religious works while still being in your sins, is a cosmic and theological impossibility! But with God, NOTHING IS IMPOSSIBLE. He is able to wash away our sins and declare us 100% righteous, if we believe on what this Baby accomplished through His life and in His death on the cross. By offering His own blood, this Baby has made available to you God's forgiveness, in spite of us being His enemies and constantly disobeying Him. God is offering us eternal life with Him, only if we believe in His Son – born of a virgin, who lived a sinless life, died a cruel death, buried and then rose again from the dead as a proof of God's acceptance of His sacrifice on our behalf. Will you believe this virgin-born Baby?

यीशु मसीह का कुंवारी द्वारा जन्म

जादू देखना कौन पसंद नहीं करता! हम आश्चर्य में पड़ जाते है जब हम जैसा कोई चाकू निगल लेता है, या अपने कोट के अंदर से कबूतर निकाल लेता है, या फिर ताश के पत्तों से कोई चाल चलता है| पर हम अच्छी तरह समझते है की जादू केवल महान कला, आँखों का धोखा और विज्ञान का संयोजन है| हमारा जादू केवल प्रकृति के नियमों के अंतर्गत हो सकता है, जिसकी रचना परमेश्वर ने की है| हमारे शरीर को ही देख लीजिये – अपने सीमा के बाहर हम मनुष्य होने के नाते कुछ भी नहीं कर सकते| प्रसव के बारे में सोचें – यह स्पष्ट है की एक बच्चे का जन्म होने के लिए एक पुरुष और एक स्त्री का मिलना ज़रूरी है| कोई अकेला व्यक्ति अपने बलबूते पर बच्चे को जन्म नहीं दे सकता – यह एक प्राकृतिक असम्भवता है! ... तब तक जब की कोई प्रकृति के बाहर से आकर दखल नहीं करता|

अब देखें बाइबिल यीशु मसीह के पैदा होने के बारे में **लूका १:२६-३६** में क्या समझाता है (लेखक लूका खुद एक चिकित्सक है)

> *इलीशिबा को जब छठा महीना चल रहा था, गलील के एक नगर नासरत में परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूत जिब्राईल को एक कुँवारी के पास भेजा गया जिसकी यूसुफ़ नाम के एक व्यक्ति से सगाई हो चुकी थी। वह दाऊद का वंशज था। और उस कुँवारी का नाम मरियम था। जिब्राईल उसके पास आया और बोला, "तुझ पर अनुग्रह हुआ है, तेरी जय हो। प्रभु तेरे साथ है।" यह वचन सुन कर वह बहुत घबरा गयी, वह सोच में पड़ गयी कि इस अभिवादन का अर्थ क्या हो सकता है? तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मरियम, डर मत, तुझ से परमेश्वर प्रसन्न है। सुन! तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम यीशु रखेगी। वह महान होगा और वह परमप्रधान का पुत्र कहलायेगा। और प्रभु परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन प्रदान करेगा। वह अनन्त काल तक याकूब के घराने पर राज करेगा तथा उसके राज्य का अंत कभी नहीं होगा।" इस पर मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह सत्य कैसे हो सकता है? क्योंकि मैं तो अभी कुँवारी हूँ।" उत्तर में स्वर्गदूत ने उससे कहा, "तेरे पास पवित्र आत्मा आयेगा और परमप्रधान की शक्ति तुझे अपनी छाया में ले लेगी। इस प्रकार वह जन्म लेने वाला पवित्र बालक परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा। और यह भी सुन कि तेरे ही कुनबे की इलीशिबा के गर्भ में भी बुढापे में एक पुत्र है और उसके गर्भ का यह छठा महीना है। लोग कहते थे कि वह बाँझ है। किन्तु परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।"*

एक समझदार महिला होने के नाते मरियम अच्छी तरह जानती थी की बिना शादी किये उसे बच्चा होना नामुमकिन है| लेकिन स्वर्गदूत ने उसे समझाया की परमेश्वर उसकी शारीरिक सीमाओं पर जय पाने वाले है| उसकी गर्भावस्था सारे संसार में अनोखी होगी| इतिहास के अरबों लोगों में से ये जो बालक होगा, उसका इस संसार में आने का ज़रिया सबसे अलग होगा| और यह बालक केवल एक साधारण मनुष्य नहीं होगा| वो परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा|

Merry Christmas!

इसी बात को बाइबिल **मत्ती १:१८-२३** में समझाता है की मरियम के पति यूसुफ को इस प्रकार के जन्म की खबर कैसे मिली|

> *यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: जब उसकी माता मरियम की यूसुफ के साथ सगाई हुई तो विवाह होने से पहले ही पता चला कि (वह पवित्र आत्मा की शक्ति से गर्भवती है।) किन्तु उसका भावी पति यूसुफ एक अच्छा व्यक्ति था और इसे प्रकट करके लोगों में उसे बदनाम करना नहीं चाहता था। इसलिये उसने निश्चय किया कि चुपके से वह सगाई तोड़ दे। किन्तु जब वह इस बारे में सोच ही रहा था, सपने में उसके सामने प्रभु के दूत ने प्रकट होकर उससे कहा, "ओ! दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को पत्नी बनाने से मत डर क्योंकि जो बच्चा उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह एक पुत्र को जन्म देगी। तू उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार करेगा।" यह सब कुछ इसलिये हुआ है कि प्रभु ने भविष्यवक्ता द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो: "सुनो, एक कुँवारी कन्या गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म देगी। उसका नाम इम्मानुएल रखा जायेगा।" (जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ है।")*

यूसुफ को अच्छी तरह पता था की यह बच्चा उसका नहीं है| और स्वर्गदूत ने भी उसे यही समझाया की इस बालक का स्रोत स्वर्ग है| केवल गर्भावस्था अलौकिक नहीं था, लेकिन बालक के नाम में भी दैवीय महत्त्व था| "यीशु" नाम का अर्थ है "परमेश्वर बचाता है"| यदि "परमेश्वर बचाता है" नामक बालक मानव जाती को उनके पापों से बचाएगा, तो यह बात उस बालक के बारे में क्या साबित करता है? यही की वह स्वयं परमेश्वर है! परमेश्वर जो मानव बनकर स्वर्ग से नीचे आये!

दोस्तों, यही है क्रिसमस का सन्देश| वह अनंत, अदृश्य, सर्वशक्तिमान और पवित्र परमेश्वर जिसने मनुष्य का रूप लिया केवल एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए – आपकी आत्मा का उद्धार! जैसे कुंवारी द्वारा जन्म होना परमेश्वर के अलावा कोई नहीं सिद्ध कर सकता, वैसे ही आपके प्राणो का बचाव तब तक नहीं हो सकता जब तक परमेश्वर स्वयं कुछ नहीं करते| अपने पापों में रहते हुए अच्छे और धार्मिक कर्मो के द्वारा आपका स्वर्ग में जाना एक लौकिक और धार्मिक असम्भवता है| किन्तु परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं! वे आपके सारे पापों को धो सकते है और आपको पूर्णतः धार्मिक ठहरा सकते है, यदि आप इस बालक ने अपने जीवन और मृत्यु के द्वारा जो हासिल किया है उसपर विश्वास करे तो| यह जानते हुए की आप परमेश्वर के शत्रु है और उनके प्रति अनाज्ञाकारी रहे है, फिर भी इस बालक ने अपने लहू के बलिदान से आपके लिए परमेश्वर की माफ़ी उपलब्ध की है| परमेश्वर हमें उनके साथ अनंतकाल का जीवन बिताने का निमंत्रण दे रहे है, यदि हम केवल उनके पुत्र पर विश्वास करे – वह जो कुंवारी द्वारा जन्मा, एक पापरहित जीवन जीया, एक दर्दभरी मौत मरा, गाढ़ा गया, और फिर तीसरे दिन जी उठकर यह साबित किया की परमेश्वर ने उसके बलिदान को स्वीकारा है| क्या आप इस कुंवारी द्वारा जन्मे बालक पर विश्वास करेंगे?